RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary 2021; 6(1):51-53
https://doi.org/10.31305/rrijm.2021.v06.i01.011
Original Article
Double Blind Peer Reviewed Journal
https://www.rrjournals.com/

राहुल सांकृव्यायन एक स्वच्छन्द व्यक्तित्व "वोल्गा से गंगा" पर आधारित

*Manjula Chaturvedi

Research Scholar, OSGU – Hirar (Hariyana)

ABSTRACT

शोध पत्र 'वोल्गा से गंगा' तक का एक महत्वपूर्ण अवलोकन है, जो राहुल साकृंव्यायन द्वारा रचित प्रसिद्ध यात्रा साहित्य में से एक है। वे हिन्दी यात्रा साहित्य के जनक के रूप में जाने जाते है। इन दो प्रमुख नदियो को भी अपने लेखन साहित्य में जोडना यह दर्शाता है कि उनका प्रक्रति प्रेम एवं नदी दोनों को माँ के रूप में मान्यता प्राप्त है, यहाँ पर नदी का बहता हुआ जल जो अनेक स्थानों से होता हुआ गुजरता है लेखक की स्वच्छंद विचारधारा को दर्शाता है।

रूसी संस्कृति में 'वोल्गा' को 'मातुष्का' कहा जाता है, जिसका अर्थ है - 'माँ वोल्गा' वहीं दूसरी तरफ भारतीय संस्कृति में गंगा को माता के समान पूजा जाता है।

पुस्तक 'वोल्गा से गंगा' ऐतिहासिक कथाओं का एक महत्वपूर्ण संग्रह है जिसे मूल रूप से ऐतिहासिक पर्दे पर समय को गहराई के साथ हिन्दी में लिखा गया था। इस पुस्तक की मुख्य भाषा हिन्दी है, बाद में यह कई अन्य भाषाओं में भाषान्तरित की गई। राहुल सांकृव्यायन की रचनाओं ने पाठकों को यात्रा साहित्य के प्रति नया दृष्टिकोण दिया और जीवन को सही तरीके से जीने का नया दृष्टिकोण दिया एवं मार्ग दर्शन प्रदान किया।

Keywords: *वोल्गा, गंगा, मातुष्का, स्वच्छंद, आर्यन ईतिहास*

Article Publication

Published Online: 17-Jan-2021

***Author's Correspondence**

Manjula Chaturvedi
Research Scholar, OSGU – Hirar (Hariyana)

majulaymst[at]gmail[dot]com

© 2021The Authors. Published by *Research Review Journals*

This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

एक परिचय:-

हिन्दी साहित्य में महापंडित राहुल सांकृत्यायन का नाम इतिहास में स्वर्णअक्षरों में अंकित है। राहुल जी का जन्म 6 अप्रेल, 1893 ई. को हुआ था, उनके बचपन का नाम केदारनाथ पाण्डेय था, इनके पिता गोवर्धन पाण्डेय एक धार्मिक – विचार धारा वाले किसान थे, एवं इनकी माता अपने माता – पिता को अकेली पुत्री थी, इनकी माता के छोटे भाई का नाम दीपचंद पाठक था, राहुल की माता अपने पिता के घर में ही रहती थी। केदार जब छोटे थे, तभी इनकी माता का देहान्त हो गया था, तो केदार का बचपन अपने नाना – नानी के साथ बीता। प्रारम्भिक शिक्षा के लिए इनको मदरसे भेजा गया। इसी समय उनके नाना – नानी ने इनका विवाह कर दिया, बाल्यावस्था में हुये विवाह के बाद ही राहुलजी का मन अपने नाना के घर से उचट गया और उन्होनें घर छोड दिया, उस समय राहुलजी मात्र 18 वर्ष के किशोर थे, घर से भागकर राहुलजी ने एक मठ में जाकर सन्यास ग्रहण किया, अब वह साधु बन चुके थे। लेकिन अपनी यायावरी प्रवृत्ति के कारण वे एक स्थान पर टिक नही पाते थे, और मठ को छोडकर वे कलकत्ता भाग आये, उनके मन में ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा कूट कूट कर भरी थी। इसी ज्ञान की पिपासा के कारण उन्होनें सम्पूर्ण भारत भ्रमण किया।

राहुलजी का सम्पूर्ण जीवन उनकी रचनाओं को समर्पित था, चूकि वे स्वभाव से घुमक्कडी प्रवृत्ति के थे, इस वजह से उन्होने कई यात्राए को, ओर इन यात्राओं को उन्होने भरपूर लाभ उठाया, उन्होने वहाँ की भाषा एवं बोलियो को सीखा, और जहाँ भी रहते थे वहाँ के लोगो से पूरी तरह घुल मिल जाते थे ओर उस स्थान के बारे में (जहाँ वे रूकते थे) पूरी जानकारी एकत्रित करते थे। वहाँ की संस्कृति, समाज व साहित्य का गूढता से अध्ययन करते थे।

राहुल साकृत्यायन उस दौर से गुजर रहे थे जब ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत भारतीय समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था ओर राजनीति सभी संक्रमण काल की स्थिति में थे। उस समय समाज में समाज सुधार का काम चरम पर था एवं राजनीतिक रूप से देखे तो काँग्रेस का शुरुआती दौर चल रहा था। ऐसी परिस्थितियों में राहुल साकृत्यायन भी इससे दूर नहीं रह सके, ओर अपनी घुमक्कड प्रवृत्ति के कारण एवं जिज्ञासु मन के साथ उन्होने घर बार त्याग कर साधु वेष – धारण करके सन्यासी से लेकर वेदान्तो, आर्यसमाजी व किसान नेता एवं बौद्ध – भिक्षु से लेकर साम्यवादी चिन्तक तक का लम्बा सफर तय किया। सन् 1930 ई. में श्रीलंका जाकर उन्होने बौद्ध धर्म में दीक्षा ग्रहण की, ओर तभीसे वे 'रामोदर साधु' से 'राहुल' हो गये, ओर साकृत्य ग्रोत्र के कारण साकृत्यायन कहलाये। उनके ज्ञान का भण्डार और अदभुत तार्किक शक्ति के भण्डार को देखकर काशी के पण्डितो ने उन्हे 'महापण्डित' की उपाधि से सम्मानित किया ओर इसप्रकार इतनी लम्बी यात्रा के बाद वे केदारनाथ पाण्डेय से महापण्डित राहुल साकृत्यायन हो गये।

सन् 1937 ई. में वे रूस के एक स्कूल लेनिनग्राद में संस्कृत के अध्यापक हो गये, ओर यहाँ इन्होने गृहस्थ जीवन का आरम्भ किया, यहाँ राहुल ने एलिना नामक एक महिला से दूसरा विवाह किया। ओर एक पुत्र की प्राप्ति हुई, जिसका नाम उन्होने 'इगोर राहुलोविच' रखा।

चुँकि राहुलजी का समूचा जीवन घुमक्कडों का था, इस वजह से उन्होने कई भाषाओं का अध्यन किया था – जिनमें साहित्य एवं प्राचीन संस्कृत – पाली – प्राकृत – अपभ्रंश आदि भाषाओं का लगातार अध्ययन मनन करके करने की उनमें अपूर्व विशिष्टता थी। प्राचीन एवं नवीन साहित्य – दृष्टि की जितनी हगरी पकड राहुलजी में थी, उतनी विशेषता सामान्यतः कम ही देखने को मिलती है। घुमक्कडों को जीवन व साहित्य का मूल आधार बनाना सबके बस की बात नहीं है।

साहित्यिक जीवनः-

राहुलजी के साहित्यिक जीवन को शुरुआत सन् 1927 ई. से होती है। वास्तव में जिस प्रकार वे एक स्थान पर नहीं ठहरते थे, उसी प्रकार उनको कलम भी नही रूकती थी, उन्होंनें विभिन्न विषयों पर लगभग 150 से अधिक ग्रन्थों को रचना की। और लगभग 130 से अधिक प्रकाशित भी हो चुके है।

राहुलजी ने हिन्दी साहित्य को एक विपुल भण्डार दिया, उन्होने मात्र हिन्दी साहित्य के लिए ही नहीं, अधिक भारत के कई क्षेत्रो में जाकर शोध कार्य किया। राहुलजी के साहित्य को देख कर पता चलता है कि उनकी पैठ न केवल प्राचीन नवीन भारतीय साहित्य में थी, अधिक विब्बतो, सिंहली, अंग्रेजो, चीनो, क्रेचो, जापानी आदि भाषाओं को सीखा और उन्हें अपने साहित्य में उतारा। शायद यही कारण है कि एक साहित्यकार के रूप में राहुल सांकृव्यायन को, सभी अपनी भाषा का साहित्यकार समझते है। चाहे वह किसी भी भूल का क्यूँ न हो। राहुल जी जहाँ भी जाते थे, वहाँ की हर बात सीखने की कोशिश करते थे, ओर सफल भी होते थे। जब वे साम्यवाद के सम्पर्क में गये, तो कालमार्क्स, लेनिन, स्तालिन आदि के राजनीतिक दर्शन की पूरी जानकारी प्राप्त की। यही कारण है, कि उनके साहित्य में जनता, जनता का राज्य ओर मेहनत कश मजदूरों का स्वर प्रबल ओर प्रधान है।

राहुल जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। धर्म, दर्शन, लोक – साहित्य, यात्रा साहित्य, इतिहास, राजनीति, जीवनी, कोश प्राचीन तालपोथियों का सम्पादन आदि विविध क्षेत्रों में स्तुत्य कार्य किया है, राहुल जी ने प्राचीन खण्डहरों से गणतंत्रीय प्रणाली को खोज की है।

'सिंह सेनापति' जैसे कुछ कृतियो में उनको यह अन्वेषी वृत्ति देखी जा सकती है, उनकी रचनाओं में प्राचीनता की सुन्दर छबि विद्यमान है, इतिहास के प्रति गौरव ओर वर्तमान के प्रति उनकी दृष्टि का समन्वय अवर्णनीय है। उन्होंनें प्राचीन व वर्तमान की समग्रता को आत्मसात करके हमें मौलिक दृष्टि देने का प्रयास किया है। साहित्य चाहे साम्यवादी हो या बौद्ध दर्शन हो या कोई इतिहास सम्मत उपन्यास हो या 'वोल्व से गंगा' की कहानियाँ – हर जगह राहुलजी की चिन्तन व्रत्ति – एवं सूक्ष्म दृष्टि के साथ एक खुलापन भी दिखाई देता है। जिसे हम हिन्दी मे 'स्वच्छंदता' का नाम भी दे सकते है। इसको चर्चा हम अगले प्रकरण में करेंगे।

संक्षिप्त में यही कह सकते हैं कि राहुल सांकृत्यायन न केवल हिन्दी साहित्य बल्कि समूचे भारतीय वाडमय के एक ऐसे महारथी है, जिन्होने प्राचीन ओर नवीन, देशो एवं पश्चिम, दर्शन एवं राजनीति ओर जीवन के उन अछूते तथ्यों पर प्रकाश डाला है, जिन पर सामान्यतः किसी की दृष्टि नहीं पहुंच पाती। सधहारा के प्रति प्रेम होने के कारण अपनी साम्यवादी कृतियों में किसानो, मजदूरो ओर मेहनत कश लोंगो का सहारा बन कर उभरे।

राहुलजी ने विषयानुसार भाषा शैली का वरण किया है, अधिकतर साहित्य सामान्य एवं सरल भाषा में प्रस्तुत किया है, और कई पुस्तकें इनकी अनुवादित भी है।

निष्कर्ष:-

राहुल सांकृव्यायन का जीवन देखा जाये तो कहने को तो वे 19वी सदी के रचनाकार है, परन्तु वर्तमान समय में उनका साहित्य उतना ही नवीन है जितना उस समय था, उनकी हर कहानी, उपन्यास एव साहित्यिक कृतियाँ आज के वर्तमान परिवेश में लोगों को हर वर्ग को शिक्षा प्रदान करती है।

हिन्दी को राहुलजी ने बहुत सम्मान दिया। उन्ही के अपने शब्दों में - 'मैने नाम बदला, वेशभूषा बदली, खानपान बदला, सम्प्रदाय बदला लेकिन हिन्दी के सम्बंध में मैने विचारों मे कोई परिवर्तन नहीं किया' राहुल साकृत्यायन की विचारधारा आज के समय में काफी प्रासंगिक है। राहुल का लेखन उनके व्रत्तान्त आज भी ओर आने वाली कई सदियों तक जन – जन का मार्ग दर्शन करेगी। हिन्दी के प्रसंग में वे कहते है –

'हिन्दी, अंग्रेजी के बाद दुनिया के सबसे अधिक संख्या वाले लोंगो की भाषा है। इसका साहित्य 750 ई. से शुरू होता है और सरहपा, कान्हापा, गोरखनाथ, चन्द्र, कबीर जायसी, सूर, तुलसी, बिहारी, हरिशचन्द्र जैसे कवि ओर लल्लूलाल, प्रेमचंद जैसे लेखक दिए है। इसका भविष्य अत्यन्त उज्जवल, भूत से भी अधिक प्रशस्त है।'

हिन्दी भाषी लोग भूत से ही नही आज भी सबसे अधिक प्रवास निरत जाति है। गायना (दक्षिण अमेरिका), फिजो, मर्शेस, दक्षिण अफ्रीका तक लाखों की संख्या में आज भी हिन्दी भाषी फैले हुए है।

सन्दर्भ:-

[1]. "वोल्गा से गंगा", लेखक राहुल साकृत्यायन और गूगल सर्च (wikipedia)